सामान्य वर्ग के किशोर विद्यार्थियों के मूल्यों पर सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव

1. सत्येन्द्र कुमार

शोधार्थी शिक्षा संकाय

ओरिएंटल यूनिवर्सिटी, इंदौर

2. डॉ. गीतांजलि शर्मा

प्रभारी डीन, शिक्षा विभाग

ओरिएंटल यूनिवर्सिटी, इंदौर

सारांश:

किशोरावस्था में व्यक्तित्व और मूल्य निर्माण का समय होता है, और इस अवधि के दौरान सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव महत्वपूर्ण होता है। यह अध्ययन सामान्य वर्ग के किशोर विद्यार्थियों के मूल्यों पर सआस्त के प्रभाव की जांच करता है। उच्च सआस्त वाले परिवार अपने बच्चों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और सह-पाठयक्रम गतिविधियों में भाग लेने के अवसर प्रदान करते हैं, जो उनके ज्ञान और कौशल को विकसित करने में मदद करता है। इसके विपरीत, निम्न सआस्त वाले परिवार सीमित संसाधनों के कारण बच्चों को इन अवसरों से वंचित रह सकते हैं, जिससे उनके शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास में असमानताएँ उत्पन्न होती हैं। सआस्त का किशोर मूल्यों पर प्रभाव समझना शैक्षिक असमानताओं को दूर करने और समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।

सूचक शब्द

किशोरावस्था: यह जीवन का वह चरण है जब व्यक्ति बचपन से वयस्कता की ओर बढ़ता है। इसमें शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक परिवर्तन होते हैं।

सामाजिक आर्थिक स्तर:यह किसी व्यक्ति या परिवार की आर्थिक स्थिति और सामाजिक स्थिति को दर्शाता है। इसमें आय, शिक्षा, और व्यवसाय शामिल होते हैं।

मूल्य विकास: यह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य विकसित होते हैं। किशोरावस्था में यह विकास महत्वपूर्ण होता है।

शैक्षिक अवसर: ये वे अवसर हैं जो शिक्षा प्राप्त करने और विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए मिलते हैं। उच्च सआस्त वाले परिवारों को अधिक शैक्षिक अवसर मिलते हैं।

परिचय:

किशोरावस्था व्यक्तित्व और मूल्यों के निर्माण का महत्वपूर्ण समय है, जहां सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव महत्वपूर्ण होता है। इस अध्ययन में सामान्य वर्ग के किशोर विद्यार्थियों के मूल्यों पर सामाजिक आर्थिक स्तर के प्रभाव को समझाया गया है। उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और सह-पाठयक्रम गतिविधियों तक पहुंच प्रदान करता है, जबकि निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर अवसरों की कमी के कारण विकास में बाधा डालता है। सामाजिक आर्थिक स्तर का किशोर मूल्यों पर प्रभाव समझना शैक्षिक असमानताओं को दूर करने और समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।

उद्देश्य

सामान्य वर्ग के किशोर विद्यार्थियों के मूल्यों पर सामाजिक आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना

सामान्य वर्ग के किशोर विद्यार्थियों के मूल्यों पर सामाजिक आर्थिक स्तर मे कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन का परिसीमन

यह शोध कई पहलुओं में सीमांकित है:

भौगोलिक दायरा: यह अध्ययन अन्य क्षेत्रों को छोड़कर केवल बिहार राज्य के सारण प्रमंडल भारत क्षेत्र पर केंद्रित है।

विद्यालय का प्रकार: जांच उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तक सीमित है, जिसमें बिहार राज्य के सारण प्रमंडल भारत क्षेत्र के सरकारी और निजी दोनों संस्थान शामिल हैं।

नमूना आकार: अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 100 विद्यार्थियों का एक नमूना शामिल है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

सामान्य वर्ग के किशोर विद्यार्थियों के मूल्यों पर सामाजिक आर्थिक स्तर के प्रभाव पर कई अध्ययनों ने महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले हैं। **गुप्ता (2018)** के अध्ययन में पाया गया कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले परिवारों के किशोरों में उच्च नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों की प्रवृत्ति अधिक होती है, क्योंकि उन्हें बेहतर शैक्षिक और सांस्कृतिक अवसर मिलते हैं। दूसरी ओर, **शर्मा (2020)** के शोध में यह निष्कर्ष निकाला गया कि निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले परिवारों के किशोरों में नैतिक मूल्यों का विकास बाधित हो सकता है, क्योंकि उनके पास संसाधनों की कमी होती है। इसी तरह, **वर्मा (2**022) के अध्ययन ने दिखाया कि सामाजिक आर्थिक असमानता

किशोर विद्यार्थियों के मूल्य निर्माण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है, जिसमें उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले किशोरों में आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता अधिक होती है। इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि सामाजिक आर्थिक स्तर किशोरों के मूल्य निर्माण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है।

क्रियाविधि

नमूना:

यह अध्ययन सामान्य वर्ग के किशोर विद्यार्थियों **के मूल्यों ऍवम सामाजिक आर्थिक स्तर पर** ध्यान केंद्रित करता है, जो बिहार राज्य के सारण प्रमंडल भारत क्षेत्र में है।

लक्ष्य जनसंख्या:

बिहार राज्य के सारण प्रमंडल क्षेत्र में चयनित चार स्कूलों के सामान्य वर्ग के किशोर विद्यार्थी

नमूना आकार: 100 विद्यार्थी (सामान्य वर्ग) ।

नमूनाकरण तकनीक: विद्यार्थियों का चयन उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण विधि द्वारा किया गया ।

अध्ययन डिज़ाइन: सर्वेक्षण अनुसंधान

यह अध्ययन भारत के सारण प्रमंडल क्षेत्र के सामान्य वर्ग के किशोर विद्यार्थी के बीच रुचि एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन के लिए एक क्रॉस-सेक्शनल सर्वेक्षण डिज़ाइन का उपयोग करता है।

अध्ययन के लिए प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में किशोरावस्था के विद्यार्थियों के मूल्य मापन हेतु महेंद्र पाटीदार एवं अर्चना दुबे (2014) द्वारा निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। ऍवम सामाजिक-आर्थिक स्तर मापने के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित मापनी का उपयोग किया गया।

डेटा विश्लेषण और व्याख्या

तालिका

सामान्य वर्ग के किशोर विद्यार्थियों के मूल्य और सामाजिक आर्थिक स्तर

	N	**माध्य**	**प्रमाणिक विचलन**	**t-मूल्य**	**p-मूल्य**
मूल्य	100	88.04	20.01	0.22	1.96
सामाजिक आर्थिक स्तर	100	94.54	22.29		

व्याख्या:

उपरोक्त तालिका में सामान्य वर्ग के 100 किशोर विद्यार्थियों के मूल्य और सामाजिक आर्थिक स्तर के आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं। मूल्य के लिए माध्य 88.04 है और प्रमाणिक विचलन 20.01 है, जबकि सामाजिक आर्थिक स्तर के लिए माध्य 94.54 है और प्रमाणिक विचलन 22.29 है। t-मूल्य 0.22 और p-मूल्य 1.96 है, जो यह दर्शाता है कि सामाजिक आर्थिक स्तर का किशोर विद्यार्थियों के मूल्यों पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

\शैक्षिक निहितार्थ

यह अध्ययन दर्शाता है कि सामान्य वर्ग के किशोर विद्यार्थियों के मूल्यों पर सामाजिक आर्थिक स्तर का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है। इससे शैक्षिक नीतियों को यह समझने में मदद मिलती है कि सभी आर्थिक वर्गों के विद्यार्थियों के मूल्यों का विकास समान रूप से संभव है, बशर्ते कि उन्हें समान शैक्षिक अवसर प्रदान किए जाएं। इसके आधार पर, शैक्षिक संस्थानों को सभी वर्गों के विद्यार्थियों के लिए समान और समावेशी वातावरण सुनिश्चित करना चाहिए।

अग्रिम शोध हेतु सुझाव:

1. विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तरों के किशोरों पर विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।
2. विभिन्न शैक्षिक पद्धतियों के प्रभाव का मूल्यांकन किया जा सकता है।
3. दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन करने के लिए अनुवर्ती अनुसंधान किया जा सकता है।
4. सांस्कृतिक और क्षेत्रीय अंतर के प्रभावों का विश्लेषण किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. गुप्ता, आर. (2018). सामाजिक आर्थिक स्तर और किशोर मूल्यों का अध्ययन. नई दिल्ली: शैक्षिक प्रकाशन.
2. शर्मा, पी. (2020). शिक्षा और समाज: सामाजिक आर्थिक असमानताएँ. मुंबई: ज्ञानदीप प्रकाशन.
3. वर्मा, एस. (2022). किशोरावस्था में व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक आर्थिक प्रभाव. कोलकाता: विद्या निकेतन.

4. पाटीदार, म., & दुबे, अ. (2014). किशोर विद्यार्थियों के मूल्य मापन हेतु प्रश्नावली. भोपाल: शैक्षिक अनुसंधान केंद्र.

5. कुमार, वी. (2019). सामाजिक आर्थिक असमानता और शिक्षा. जयपुर: राजस्थान विश्वविद्यालय प्रकाशन